ज्वालामुखी योग - 25

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **तपस्वी मूर्त का अर्थ है- तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारो ओर फैलती हुई अनुभव में आवें। सिर्फ स्वयं के प्रति याद स्वरूप बन शक्ति सेना का मिलन मनाना वह अलग बात है। लेकिन तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है।**

➳ _ ➳ **जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ। ऐसे नहीं, याद से वा ज्ञान के मनन से स्वयं को श्रेष्ठ बनाया, मायाजीत विजयी बनाया इसी में सिर्फ खुश नहीं रहना।**

➳ _ ➳ लेकिन सर्वखज़ानों में सारे दिन में कितनों के प्रति विधाता बने? सभी खज़ाने हर रोज कार्य में लगाये वा सिर्फ जमा को देख खुश हो रहे हैं? **अभी यह चार्ट रखो कि खुशी का खज़ाना, शान्ति का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, सहयोग देने का खज़ाना कितना बाँटा अर्थात् कितना बढ़ाया।**

➳ _ ➳ इससे वह कामन चार्ट जो रखते हो वह स्वत: ही श्रेष्ठ हो जायेगा। समझा - अभी कौन-सा चार्ट रखना है? **यह तपस्वी स्वरूप का चार्ट है - विश्व-कल्याणकारी बनना।** तो कितने का कल्याण किया! वा स्व-कल्याण में ही समय जा रहा है? स्व-कल्याण करने का समय बहुत बीत चुका। **अभी विधाता बनने का समय आ गया है। इसलिए बापदादा फिर से समय का इशारा दे रहे हैं।**

➳ _ ➳ **अगर अब तक भी विधातापन स्थिति का अनुभव नहीं किया तो अनेक जन्म विश्व-राज्य अधिकारी बनने के पद्मापदम भाग्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, क्योंकि विश्व-राजन विश्व के मात-पिता अर्थात् विधाता हैं। अब के विधातापन के संस्कार अनेक जन्म प्राप्ति कराता रहेगा, अगर अभी तक लेने के संस्कार, कोई भी रूप में हैं तो नाम लेवता, शान लेवता वा किसी भी प्रकार के लेवता के संस्कार विधाता नहीं बनायेंगे।**

(07.04.1986)

➢ **खजाने**

➳_ ➳ **हमे किस बात का चार्ट रखना है ?**

→ ख़ुशी का खजाना

→ शांति का खजाना

→ गुणों का खजाना

→ शक्तियों का खजाना

→ ज्ञान का खजाना

→ सहयोग देने का खजाना

- **कितना बढाया है, वह चेक करना है**

➳_ ➳ **खजानों को कैसे बाटना है ?**

→ **खजाने बाटने की विधि है**

- **जितने भी खजाने है उससे पहले स्वयं को भरपूर करना**

→ **संकल्प से / मन्सा से** खजानों को बाटना

- आत्माओ को इमर्ज करना और उन्हें वाइब्रेशन देना
  - यह विधि सर्व श्रेष्ठ है

→ **बोल से / वाणी से / शब्द से / भाषण से** खजानों को बाटना

→ **द्रष्टि** से खजानों को बाटना

- द्रष्टि की 2 साधना है
  - **आत्मिक द्रष्टि की साधना**
  - **द्रष्टि से शक्तिया खजानों को देने की साधना**
- हमने किसी को द्रष्टि दी और उसको लगे
  - इस द्रष्टि से कुछ हमे मिला
  - कोई अद्रश्य किरण
  - लेसर बिम्ब की तरह हमे मिल रही है ऐसा अनुभव हो

→ **श्रेष्ठ चलन** से खजानों को बाटना

- किसी को कुछ भी कहा नहीं
- किसी को कुछ भी समजाया नहीं
  - परन्तु हमने देखकर ही सामने वाले को सिखा दिया

→ **कर्म** के द्वारा खजानों को बाटना

→ **वृति और वाइब्रेशन** के द्वारा खजानों को बाटना

- इसका संबंध संकल्पों से है
  - जितने ऊँचे संकल्प
  - जितने श्रेष्ठ संकल्प
  - उतनी ही श्रेष्ठ वृति होगी

→ **संबंध और सम्पर्क** के द्वारा खजानों को बाटना

- जिस जिस के भी सम्पर्क में आये उन्हें
  - उस सम्पर्क से ही खजानों को दे देना
  - जो भी समबन्ध सम्पर्क में आय,उन्हें कुछ न कुछ दो
  - जरूरी नहीं है की, ज्ञान रिलेटेड ही खजाना दो
  - स्थूल सहयोग भी दे सकते है

➳_ ➳ **खजानों को कैसे बाटना है ?**

→ बिना किसी **इरछा** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **अपेक्षा** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **अहंकार** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **इरछा** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **पक्षपात** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **इर्ष्या, द्वेष** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **लालच** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **दिखावा** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **हिसाब** के खजानों को बाटना है

→ बिना किसी **स्वार्थ** के खजानों को बाटना है